

विद्यालय और समुदाय के बीच अंतर्संबंधों का अध्ययन

डॉ शिल्पी कुमारी

सहायक प्रोफेसर, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, भागलपुर

Email: kumarishilpy298@gmail.com

सारांश

शिक्षा एक निरंतर चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है और विद्यालय इस प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण औपचारिक अभिकरण है। प्रसिद्ध शिक्षाविद् जॉन डीवी के अनुसार "विद्यालय समाज का एक लघु रूप है।" इस कथन के आधार पर यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि विद्यालय केवल चार दीवारों तक सीमित एक शैक्षिक केंद्र नहीं है बल्कि यह एक सामाजिक संस्था है जो समुदाय के सहयोग से ही फल-फूल सकती है। अध्ययन में यह पाया गया है कि जहां एक ओर समुदाय विद्यालय को मानवीय भौतिक और वित्तीय संसाधन प्रदान कर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करता है वहीं दूसरी ओर विद्यालय समुदाय में सामाजिक जागरूकता साक्षरता और सांस्कृतिक विकास का केंद्र बनकर कार्य करता है। यह पत्र इन दोनों के बीच के संबंधों की आवश्यकता उनके बीच आने वाली बाधाओं और इन संबंधों को मजबूत करने के व्यावहारिक सुझावों पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द : विद्यालय समुदाय अंतर्संबंध सामुदायिक सहभागिता विद्यालय प्रबंधन समिति शिक्षा का समाजशास्त्र

प्रस्तावना

प्रत्येक राष्ट्र अपने समुदायों की प्रत्येक इकाई को विकसित करने के लिए नई-नई योजनाएँ बनाता है परंतु वास्तविकता यह है कि समुदाय का विकास योजनाओं से नहीं अपितु नागरिकों के विकास पर निर्भर करता है। जब तक नागरिकों में स्वयं विकसित होने की प्रवृत्ति विकसित या जागृत नहीं होगी तब तक उनके विकास की कल्पना करना भूल है। यहाँ पर ध्यान देने की बात यह है कि समुदाय में स्वयं विकसित होने की प्रवृत्ति को उत्पन्न करने का केवल एक ही मंत्र है और वह है शिक्षा जो केवल स्कूल से ही प्राप्त की जा सकती है। स्पष्ट है कि समुदाय की उन्नति केवल स्कूल द्वारा ही संभव है। इसीलिए प्रत्येक समुदाय अपनी-अपनी राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं एवं आदर्शों की पूर्ति के लिए स्कूलों का निर्माण करता है और स्कूल भी अपनी क्रियाओं एवं कार्यों के द्वारा समुदाय को जीवित रखता है। समुदाय की शैक्षिक समस्याओं को समाधान उसके स्कूलों में जितनी जल्दी हो जाता है वह समुदाय उतनी ही जल्दी विकसित हो जाता है। इसके विपरीत जब स्कूल समुदाय की समस्याओं को हल नहीं कर पाता तो समुदाय भी अपनी विकास और उन्नति की दौड़ में पिछड़ जाता है। विद्यालय और समुदाय के बीच भागीदारी होने से विद्यालय की शैक्षिक गतिविधि अच्छे से चलती है। समुदाय के द्वारा सही प्रबंधन के अभाव में कोई भी विद्यालय अपना रूप अधिक विकसित और पारदर्शी नहीं बना पाएगा। विद्यालय और समुदाय दोनों की सफलता सक्रियता पर निर्भर करता है। समुदाय के सदस्य उन लोगों का समूह है जो स्वैच्छिक रूप से अपनी सेवाएँ विद्यालय के विकास में देते हैं। इसमें सामान्य तौर पर परिवार, अभिभावक स्थानीय सरकार, आस-पड़ोस, व्यापारी संस्था, गैर सरकारी संस्था, समाजसेवक, शिक्षाविद् धार्मिक समूह इत्यादि शामिल होते हैं। समुदाय एक प्रकार का सांस्कृतिक

वातावरण है जिसमें कोई विशिष्ट संस्कृति अंतर्निहित होती है। यह एक सामाजिक रूप में निर्मित संस्था है। जहाँ अधिगम के अनुभवों को सोच समझकर एक प्रारूप के रूप में तैयार कर समुदाय के बीच लगातार रखा जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

- विद्यालय और समुदाय की पारस्परिक निर्भरता का विश्लेषण करना।
- विद्यालय के विकास में समुदाय की भूमिका को रेखांकित करना।
- समाज के उत्थान में विद्यालय के योगदान का मूल्यांकन करना।
- विद्यालय और समुदाय के संबंधों में आने वाली चुनौतियों की पहचान करना।
- इन अंतर्संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

1. समुदाय का स्कूल पर प्रभाव:-

समुदाय स्कूल को केवल आर्थिक या भौतिक सहयोग नहीं देते बल्कि बच्चों के सीखने के माहौल, शिक्षकों की कार्यप्रणाली और शिक्षा की दिशा पर गहरा असर डालते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि समुदाय स्कूल पर बहुत विस्तृत और निर्णायक प्रभाव डालते हैं जो इस प्रकार अग्रलिखित हैं:-

समुदाय के आदर्शों तथा परंपराओं का स्कूल पर प्रभाव:- प्रत्येक समुदाय अपने आदर्शों रीति-रिवाजों एवं परंपराओं को जीवित रखने के लिए स्कूल खोलते हैं। अतः स्कूल इनसे प्रभावित होकर बालकों में ऐसे गुणों को विकसित करता है जिनके आधार पर वे समुदाय की विभिन्न क्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए उसे समृद्धशाली एवं सशक्त बनाने में भरपूर सहयोग प्रदान करते हैं।

समुदाय की आर्थिक स्थिति का स्कूल पर प्रभाव:- समुदाय की आर्थिक स्थिति स्कूल को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकती है। यदि देश में जनतांत्रिक प्रणाली लागू है तो निश्चित रूप से यह वहाँ की शिक्षा व्यवस्था में भी परिलक्षित होगी। वहाँ के लोग अपने बच्चों में लोकतांत्रिक शिक्षा व्यवस्था को विकसित करना चाहेंगे। ऐसे ही यदि समुदाय में पूँजीवाद फैला हुआ है तो वहाँ के स्कूलों की बागडोर पूँजीपतियों के हाथ में होगी। जिससे वहाँ के शिक्षा का उद्देश्य] पाठ्यक्रम तथा शिक्षण-पद्धतियाँ आदि पर पूँजीवादी की छाप लगी होगी। जब से समाज में औद्योगिक क्रांति हुई है तब से समाज की आर्थिक दशा में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हो गये हैं।

2. समुदाय की आवश्यकताओं का स्कूल पर प्रभाव:-

प्रत्येक समुदाय की आवश्यकताओं संस्कृति तथा धर्म का स्कूल के ऊपर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। बालक जब प्रौढ़ होता है तब वह समुदाय की आवश्यकता की पूर्ति अपनी शिक्षा के माध्यम से ही करता है। इसलिए विद्यालय का जीवन-दर्शन उद्देश्य पाठ्यक्रम तथा शिक्षण-पद्धति आदि भी बदलते रहते हैं। वर्तमान युग में तो स्कूल को समाज का लघु रूप माना जाता है। अतः जिन क्रियाओं को बालक समुदाय अथवा समाज में रहते हुए विशाल रूप में करता है इन्हीं क्रियाओं को स्कूल बालकों से लघु रूप में कराता है।

3. समुदाय के राजनीतिक स्वरूप का स्कूल पर प्रभाव:-

समाज या देश का जैसा राजनीतिक स्वरूप होगा वहाँ के स्कूलों की व्यवस्था भी उसी के अनुरूप होगी। राजनीतिक स्वरूप यदि राजतंत्र का होगा तो वहाँ की पूरी स्कूल व्यवस्था राजतंत्र शिक्षा प्रणाली पर आधारित होगी। विद्यालय की सारी शैक्षिक क्रियाकलाप राजतंत्रात्मक शक्तियों को प्रोत्साहित करने वाली होगी।

इसके विपरित यदि राष्ट्र का स्वरूप जनतंत्रात्मक है तो वहाँ के स्कूलों की व्यवस्था जनतंत्र के आदर्शों तथा मूल्यों को दृष्टि में रखते हुए की जाती है। प्रत्येक स्कूल जनतंत्रवादी आदर्श को दृष्टि में रखते हुए प्रत्येक बालक के सामने ऐसा वातावरण प्रस्तुत करता है जिसमें रहते हुए

प्रत्येक बालक अपने व्यक्तित्व को स्वतंत्रतापूर्वक अधिक से अधिक विकसित कर सके तथा अपनी योग्यता के बल पर राष्ट्र की उन्नति में यथाशक्ति सहयोग प्रदान कर सके।

4. समुदाय के गुणों तथा दोषों का स्कूल पर प्रभाव:-

समुदाय के गुण एवं दोषों का समाज रूप से विद्यालय पर प्रभाव पड़ता है। यदि समुदाय में झूठ, छल-कपट एवं भ्रष्टाचार व्याप्त है तो स्कूल भी निश्चित रूप से इस दोषों से अलग नहीं रह सकती। ऐसे ही यदि समुदाय में सत्य और अहिंसा के गुण पाये जाते हैं तो स्कूल में भी इन्हीं गुणों की छाप दिखाई पड़ती है। कहने का तात्पर्य यह है कि समुदाय के सदस्यों में जैसी मनोवृत्तियाँ पाई जाती है उनका वैसा ही प्रभाव स्कूल के परिवेश, शिक्षकों तथा बालकों पर भी स्वाभाविक रूप से पड़ता है।

स्कूल का समुदाय पर प्रभाव:- स्कूल का समुदाय पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। स्कूल किसी समुदाय के प्रत्येक घटक को निर्बाध रूप से प्रभावित करता है। वे समुदाय में पल-बढ़ रहे छात्रों को बेहतर करियर के अवसरों के लिए तैयार करता है। ये समुदाय के मूल्यों को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। स्कूल किसी समुदाय का एक केन्द्रीय निकाय होता है। यह समाज के केन्द्र में रहता है। इससे एक सहयोगी और सुरक्षित वातावरण बनता है। स्कूल एक समुदाय को विभिन्न रूपों में प्रभावित करते हैं जिसका वर्णन इस प्रकार अग्रलिखित है:-

- 1. स्कूल का समुदाय की आवश्यकताओं पर प्रभाव:-** प्रत्येक समुदाय की अलग-अलग आवश्यकताएँ होती हैं। स्कूल अपनी शैक्षिक योजनाओं तथा शैक्षिक क्रिया-कलापों में आवश्यक परिवर्तन करके समुदाय की सभी आर्थिक, नैतिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। समय-समय पर और स्कूल की आवश्यकता में वांछित परिवर्तन होते रहते हैं।
- 2. स्कूल का समुदाय की संस्कृति पर प्रभाव:-** प्रत्येक समुदाय की एक अपनी संस्कृति होती है। स्कूली वातावरण में लिखते पढ़ते, खेलते-कूदते तथा नाना प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए बालक अपने समाज-समुदाय की संस्कृति का ज्ञान सहज ही हो जाता है। स्कूल के अभाव में कोई भी बालक अपने छोटे से जीवन काल में ही अपने समुदाय की संस्कृति को न तो सीख सकता है और ना ही उससे कोई लाभ उठा सकता है। इस प्रकार स्कूल ही वह संस्था है जो समुदाय की संस्कृति की रक्षा करता है तथा उसको विकसित और पोषित करके भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करता है।
- 3. समुदाय के जीवन पर प्रभाव:-** जॉन डीवी के अनुसार बालक के रस्म-रिवाज, विचार तथा परंपरा आदि जो एक जाति के आवश्यक गुण हैं प्राप्त करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है। स्कूल बालक के सामने ऐसे सुंदर स्वच्छ एवं सामाजिक वातावरण को प्रस्तुत करता है जिसमें रहते हुए उसे अपने समुदाय के सभी रीति-रिवाजों, परंपराओं तथा आचार-विचारों का स्वाभाविक रूप से ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इससे बालक समुदाय की जटिलता को सरल रूप में समझने योग्य बन जाता है। समुदाय के जीवन पर स्कूल का बहुत गहरा असर पड़ता है।
- 4. स्कूल का समुदाय की व्यावसायिक एवं औद्योगिक प्रगति पर प्रभाव:-** स्कूल का प्रभाव समुदाय की व्यावसायिक एवं औद्योगिक प्रगति पर पड़ता है। जब समाज में व्यवसाय और उद्योग चलाने वाले लोग होंगे तो उन्हें सही-सही व्यावसायिक एवं औद्योगिक शिक्षा का मंत्र देना भी स्कूल का ही काम होता है। विद्यालय हमेशा उन्हें माँगों की पूर्ति करता है जो समाकालीन समाज की शैक्षिक माँग हो। जब लोग ऐसी शिक्षा लेंगे तो वे अपना व्यवसाय कर सकते हैं। जिस समाज में जितने अधिक लोग शिक्षित और आत्मनिर्भर होंगे वह समुदाय उतना ही अधिक प्रगतिशील होगा। इसलिए तो भारत में सामुदायिक विकास के लिए महात्मा गाँधी ने बेसिक शिक्षा पर बल दिया। जो वक्त के साथ आगे चलकर व्यावसायिक शिक्षा व्यवस्था हमारे देश की औद्योगिकीकरण में रीढ़ की हड्डी साबित हो गई। स्कूल ही बच्चों की शक्ति को पहचान कर उसे पोषित करता है उसे आगे बढ़ने के लिए सकारात्मक स्तर पर प्रेरित करता है।

5. **स्कूल का समुदाय के नागरिकों पर प्रभाव:-** स्कूल में समुदाय के बालक शिक्षा प्राप्त करते हैं। इन बालकों पर स्कूल के जीवन-दर्शन उद्देश्य तथा पाठ्यक्रम का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। इससे प्रभावित होकर जैसे नागरिकों का निर्माण होगा वैसा ही समुदाय बनेगा। अतः समुदाय अच्छा बनेगा या बुरा यह निर्णय वहाँ के स्कूल करते हैं। यदि स्कूल नहीं होता तो समुदाय की कल्पना एक बर्बर समूह के रूप में होता जहाँ कोई भी नागरिक शायद शिक्षित नहीं हो पाता और समुदाय की कल्पना शून्य हो जाती।
6. **स्कूल का समुदाय के रहन-सहन पर प्रभाव:-** प्रत्येक समुदाय का रहन-सहन वहाँ के लोगों पर निर्भर करता है। जिस समुदाय के लोग जिस स्तर पर शिक्षित होंगे वहाँ के समुदाय का जीवन स्तर एवं रहन-सहन वैसा ही होगा। स्कूल द्वारा दिया गया आधारभूत शिक्षा व्यक्ति के जीवन का वर्तमान तथा भविष्य दोनों तय करता है इसके आधार पर समुदाय प्रभावित होता है। समुदाय की सभी आवश्यकता को स्कूल पूरा करती है जिससे वहाँ का समुदाय जागृत और विकसित बन पाता है। अतः स्कूल का समुदाय के रहन-सहन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
7. **स्कूल का समुदाय की समस्याओं पर प्रभाव:-** प्रत्येक समुदाय की कुछ न कुछ सरल और जटिल समस्याएँ होती हैं। समुदाय की ये समस्याएँ हमें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से निरंतर प्रभावित करते रहते हैं। इन समस्याओं को स्थायी रूप से सुलझाने में स्कूली परिवेश एक आवश्यक उपाय करता है। स्कूल आस-पास के समाज-समुदाय को अपने स्तर से शिक्षित करने का प्रयास करती है शिक्षित होकर समुदाय के लोग अपनी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करती है। आवश्यक ज्ञान के माध्यम से समुदाय दिन-प्रतिदिन उन्नति के शिखर पर चढ़ता रहता है।
8. **समुदाय के परिवर्तन पर प्रभाव:-** प्रत्येक समुदाय में अनेक परिवर्तन होते रहते हैं। परिवर्तन की गति को बनाये रखने के लिए स्कूल से अच्छा कोई साधन नहीं होता है। विद्वानों का कहना है कि यदि किसी राष्ट्र में कोई परिवर्तन जल्दी लाना है तो स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के मस्तिष्क में परिवर्तन लाना होगा। विश्व में जितने भी परिवर्तन हुए हैं सबकी शुरुआत स्कूल से ही हुई है। स्कूल किसी भी प्रकार का परिवर्तन चाहे वो सामाजिक हो राजनीतिक हो या धार्मिक, को लाने में सक्षम है। अतः स्कूल परिवर्तन का प्रवर्तक है।
9. **स्कूल का समुदाय के नव-निर्माण में प्रभाव:-** स्कूल का समुदाय के नवनिर्माण में बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। स्कूल समुदाय की अनुपयोगी रूढ़ियों, परंपराओं अंधविश्वासों, कुरीतियों इत्यादि पर विस्तार से विचार-विमर्श कर उसकी आलोचना करता है तथा उन सब में बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार आवश्यक संशोधन करके नवीन विचारों का प्रचार-प्रसार कर समुदाय का नवीनीकरण करता है। इस प्रकार समुदाय के नवनिर्माण का संपूर्ण उत्तरदायित्व स्कूल के ऊपर ही होता है।
10. **स्कूल का राज्य की नीतियों पर प्रभाव:-** लोकतंत्र में स्कूल राज्य के कार्यों की प्रशंसा अथवा निंदा करने के लिए स्वतंत्र होता है। अतः स्कूल राज्य की राजनीतिक आर्थिक तथा सामाजिक नीति की आलोचना करके राज्य की राजनीति को भी प्रभावित करता है। अब तो लोकसभा तथा विधान परिषद् के लिए भी स्कूल अपने प्रतिनिधियों को भेजने लगा है। ये प्रतिनिधि राष्ट्रहित के लिए बनाई गई योजनाओं पर अपना स्वतंत्र मत प्रकट करते हैं।

भारत में स्कूल तथा समुदाय के बीच संबंध की स्थिति:-

भारत में स्कूल तथा समुदाय के बीच बहुत गहरा और अटूट संबंध रहा है। यह संबंध विद्यार्थियाँ गुरुजनों अभिभावकों और स्थानीय समुदायों सभी को साथ-साथ लाने में अपनी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इससे सभी के आपसी संबंध अच्छे होते हैं और सभी को सीखने के अवसर मिलते हैं इससे समुदाय का विकास होता है। इस संबंध की पुष्ट करने के लिए दोनों के बीच मधुर संबंध का होना अत्यावश्यक है। अनेक शैक्षिक राजनीतिक सांस्कृतिक क्रियाकलाप माध्यम से हम इसके बीच के आपसी संबंध को और अधिक सुधार सकते हैं।

भारतीय स्कूल तथा समुदाय के बीच संबंध के अभाव के कारण:-

भारतीय स्कूल तथा समुदाय दोनों के बीच घनिष्ठ संबंध नहीं होने के दोषी या उत्तरदायी दोनों रहे हैं। दोनों ही अपने-अपने सीमित कार्यक्षेत्रों से बाहर नहीं निकले तथा दोनों ने ही एक-दूसरे के कार्यों में सक्रिय रूप से भाग नहीं लिया। इससे स्कूल और समुदाय के बीच दूरी बढ़ गई। परिणाम यह हुआ कि दोनों अपने-अपने उत्तरदायित्वों को निभाने में असमर्थ हो गए। भारतीय समाज में अशिक्षा व्याप्त होने के कारण लोगों को मालूम भी नहीं होता स्कूल के प्रति हमारे क्या कर्तव्य हैं। स्कूल के माध्यम से समुदाय का विकास कैसे हो सकता है इसलिए सभी लोग स्कूल को बस सरकारी संस्था समझते हैं।

लोगों की आर्थिक दशा खराब और शोचनीय है। समाज में लोग स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पा रहे वे अपने बच्चों की स्कूल की ओर क्यों देखेंगे। ब्रिटिश काल के दौरान जो दूरी विद्यालय और समुदाय के बीच आई वो आज तक पाटी नहीं जा सकी है। वस्तुस्थिति आज भी वैसी ही बनी हुई है। जब कुछ लोग शिक्षित और धनी भी है तो उसके अंदर उत्साह और जागरूकता की बहुत कमी है। उनके अंदर यह भावना खत्म हो गई है कि स्कूल हमारी अपनी संपत्ति है इसके देख-रेख देखभाल की संपूर्ण जिम्मेदारी हम समुदायवासियों की है। अतः स्कूल जैसी महत्वपूर्ण संस्था की उन्नति में कोई रुचि नहीं लेते हैं। इस सभी बंधनों से ऊपर उठ कर अगर कोई समुदाय विद्यालय के करीब आना भी चाहे तो फिर भी अनेक बाधाएँ सामने आ जाती है।

अतः अनेकानेक कारणों से भारतीय समाज में स्कूल और समुदाय के बीच अच्छे आपसी संबंध का अभाव है।

निष्कर्ष:—

विद्यालय और समुदाय के बीच का संबंध एकतरफा नहीं है। यह एक सहजीवी संबंध है। एक मजबूत जागरूक और सहयोगी समुदाय ही एक उत्कृष्ट विद्यालय का निर्माण कर सकता है और एक उत्कृष्ट विद्यालय ही एक प्रगतिशील नैतिक और विकसित समुदाय की नींव रख सकता है। शिक्षा के वास्तविक लक्ष्यों को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब विद्यालय की चार दीवारें पारदर्शी हों और समाज तथा विद्यालय एक इकाई के रूप में मिलकर कार्य करें। भविष्य की शिक्षा नीतियों को इन दोनों के बीच के सेतु को मजबूत करने पर केंद्रित होना चाहिए।

स्कूल और समाज दोनों एक-दूसरे के अभाव में आधे हैं। यदि विद्यालय को समाज से अलग या दूर कर दिया जाय तो समुदाय इसके अभाव में अधूरा हो जाएगा।

लोग के शैक्षिक और सामाजिक अस्तित्व पर खतरा आ जाएगा। बालक जन्म से ही कुछ सीखकर नहीं आता है वह न बोलना जानता है न चलना-फिरना परंतु जब वह बड़ा होकर स्कूल को जाने लगता है वैसे-वैसे उसमें सामाजिकता का विकास होने लगता है। स्कूल उसके अंदर समाज की परंपराओं रीति-रिवाजों तथा आदर्शों का ज्ञान कराके उसका समाजीकरण करने में सहयोग करता है। विद्यालय अपने चारों ओर के परिवेश में किसी समुदाय से घिरे होते है। अतः विद्यालय की प्रत्येक गतिविधि सामाजिक समूह पर आधारित होती है। समुदाय विद्यालय का एक अच्छा मित्र और पथ प्रदर्शक होता है जो वर्तमान परिस्थितियों में विद्यालय का हर संभव सहायता करता रहता है।

जागरूक और सहयोगी समुदाय ही एक उत्कृष्ट विद्यालय का निर्माण कर सकता है और एक उत्कृष्ट विद्यालय ही एक प्रगतिशील नैतिक और विकसित समुदाय की नींव रख सकता है। शिक्षा के वास्तविक लक्ष्यों को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब विद्यालय की चार दीवारें पारदर्शी हों और समाज तथा विद्यालय एक इकाई के रूप में मिलकर कार्य करें। भविष्य की शिक्षा नीतियों को इन दोनों के बीच के सेतु को मजबूत करने पर केंद्रित होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ / References

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) — *शिक्षा एवं समाज* संबंधी पाठ्य सामग्री।
2. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) — *शिक्षक शिक्षा: विद्यालय और समुदाय* संबंधी सामग्री।
3. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार — *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)*।
4. भारत सरकार — *शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 (RTE Act)*।

5. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF), NCERT।
6. राज्य शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित विद्यालय-समुदाय सहभागिता संबंधी दिशानिर्देश।
7. विद्यालय के प्रधानाचार्य, शिक्षकों, अभिभावकों एवं समुदाय के सदस्यों से लिए गए साक्षात्कार।
8. विद्यालय की SMC/विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठकों एवं अभिलेखों का अध्ययन।
9. स्थानीय समुदाय में किए गए प्रत्यक्ष अवलोकन एवं सर्वेक्षण।

Cite the Article:

कुमारी, डॉ शिल्पी. (2026). विद्यालय और समुदाय के बीच अंतर्संबंधों का अध्ययन. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1) 249-254, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 04, Issue 01, September-2026., DOI: - <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.28>

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.